ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

हरिहर काका

कक्षा - दसवीं

विषय – हिंदी
पाठ : ५
पाठ का नाम : हरिहर काका
PPT-4

Website: www.odmegroup.org
Email: info@odmps.org
Toll Free: 1800 120 2316
Sishu Vihar, Infocity Road, Patia, Bhubaneswar- 751024

लेखक कहते हैं कि बहुत बार ऐसा देखने में आता है कि बिना किसी के कुछ भी बताए, गाँव के लोगों को वास्तविक घटना का पता चल ही जाता है। हरिहर काका की घटना में भी कुछ ऐसा ही हुआ था। बात यह है कि लोगों की जबान किसी भी घटना को और ज्यादा असरदार और महत्वपूर्ण बना देती है। कोई भी घटना खुद भी अपने बारे में बहुत कुछ बता देती है, लोगों के कहने की कोई जरूरत ही नहीं पड़ती। गाँव के लोगों को न तो महंत जी ने कुछ बताया था और ना ही हरिहर काका के भाइयों ने कुछ बताया था। उसके बाद भी गाँव के लोग सच्चाई से खुद ही परिचित हो गए थे। फिर तो गाँव के लोग जब भी कहीं बैठते तो बातों का ऐसा सिलसिला चलता जिसका कोई अंत नहीं था। हर जगह बस उन्हीं की बातें होती थी। कुछ लोग कहते कि हरिहर काका को अपनी जमीन भगवान के नाम लिख देनी चाहिए। इससे उत्तम और अच्छा कुछ नहीं हो सकता। इससे हरिहर काका को कभी न ख़त्म होने वाली प्रसिद्धि प्राप्त होगी। इसके विपरीत कुछ लोग यह मानते थे कि भाई का परिवार भी तो अपना ही परिवार होता है। अपनी जायदाद उन्हें न देना उनके साथ अन्याय करना होगा। खून के रिश्ते के बीच दीवार बन सकती है । लेखक कहते हैं कि गाँव में जितने मुँह थे उतनी रंग की बातें हो रही थी। बातें करने के लिए ऐसा वाक्य कभी नहीं मिला था, इसलिए लोग चुप होने का नाम नहीं ले रहे थे। हर कोई अपनी-अपनी समझ के आधार पर समस्या के लिए उपाय खोज रहा था और ये इंतज़ार कर रहे थे कि कब कुछ घटना घटित हो। इसी के कारण बातें इतनी अधिक बढ़ गई थी कि लोग सामने और बिना सामने आए हुए भी दो भागों में बँट गए थे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

कई बार तो हालात ये हो जाते कि दोनों भागों के लोगों के बीच झगड़े की नौबत आ जाती। एक वर्ग के लोग ये चाहते थे कि हरिहर अपने हिस्से की जमीन भगवान के नाम लिख दें। क्योंकि वे सोचते थे कि ऐसा करने पर उनका देव-स्थान न सिर्फ इलाके की ही सबसे बड़ा देव-स्थान होगा, बल्कि पूरे राज्य में इसका मुकाबला कोई दूसरा देव-स्थान नहीं कर पाएगा। जो लोग यह सोचते थे, वे धार्मिक प्रवृत्ति के लोग थे और वे किसी न किसी तरह देव-स्थान से जुड़े हुए थे। असल में वे ऐसे लोग थे, जो सुबह-शाम जब भगवान को भोग लगाया जाता, तब साधु-संतों के साथ प्रसाद पाने के लिए वहाँ जुट जाते थे। ये लोग सिर्फ साधु-संतों और महंतों की तरफदारी करने वाले थे। दूसरे वर्ग के लोग गाँव के विकास के बारे में सोचने वाले लोग थे और वे लोग थे जिनके घर में हरिहर काका की तरह कोई न कोई औरत या मर्द था। गाँव का वातावरण बहुत ही तनाव भरा हो गया था और लोग इंतज़ार कर रहे थे कि कुछ न कुछ घटित हो।

13.इधर भावी आशंकाओं के मद्देनज़र----------इस मुद्दे पर वे जागरूक हो गए थे।

सिवाय - अलावा
निष्कर्ष – परिणाम
टोह - खोज
विलम्ब - देर
बय - वसीयत
जागरूक - सावधान

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

फिर चाहे वह अपना भाई हो या मंदिर का महंत। क्योंकि लेखक और हरिहर काका को अपने गाँव और इलाके के वे कुछ लोग याद आए, जिन्होंने अपनी जिंदगी में ही अपनी जायदाद को अपने रिश्तेदारों या किसी और के नाम लिखवा दिया था। उनका जीवन बाद में किसी कुत्ते के जीवन की तरह हो गया था, उन्हें कोई पूछने वाला भी नहीं था। हरिहर काका बिलकुल भी पढ़े-लिखे नहीं थे, परन्तु उन्हें अपने जीवन में एकदम हुए बदलाव को समझने में कोई गलती नहीं हुई और उन्होंने फैसला कर लिया कि वे जीते-जी किसी को भी अपनी जमीन नहीं लिखेंगे। हरिहर काका ने अपने भाइयों को भी समझा दिया था कि जब वे मर जाएँगे तो अपने आप उनकी सारी जमीन उनके भाइयों की हो जायगी। वे जमीन ले कर तो मरेंगे नहीं इसलिए लिखवाने की कोई जरुरत नहीं है। लेखक कहते हैं कि जब हरिहर काका अपने भाइयों के परिवार के साथ रहने लगे तो महंत जी हरिहर काका की खोज में रहने लगे थे। उन्हें जब भी हरिहर काका अकेले मिलते, तो वे अपनी बात रखने से पीछे नहीं हटते, वे हमेशा हरिहर काका को अपनी जमीन भगवान के नाम करने के लिए मनाते रहते थे। वे हमेशा हरिहर काका से कहते थे कि उन्हें देर नहीं करनी चाहिए। क्योंकि अच्छे काम में कभी भी देर नहीं करनी चाहिए। उन्हें जल्दी ही अपनी जमीन को भगवान के नाम कर देना चाहिए। और अपनी पूरी जिंदगी वे आराम से देव-स्थान में गुजार सकते हैं। वे हरिहर काका से कहते थे कि अगर वे ऐसा करेंगे तो उनके मरने पर उनकी आत्मा को ले जाने के लिए स्वर्ग से विमान आएगा। और वे भगवन के पास जाएँगे और स्वर्ग में ही रहेंगे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि अपने भविष्य की चिंता को ध्यान में रख कर हरिहर काका के भाई उनसे प्रार्थना करने लगे कि वे अपने हिस्से की जमीन को उनके नाम लिखवा दें। उनके अलावा हरिहर काका की जायदाद पर हक़ जताने वाला कोई नहीं था । इस विषय पर हरिहर काका ने लेखक से बहुत समय तक बात की और लेखक और हरिहर काका अंत में इस परिणाम पर पहुंचे कि अपने जीते-जी अपनी जायदाद का स्वामी किसी और को बनाना ठीक नहीं होगा। लेकिन हरिहर काका उनकी किसी भी बात का जवाब सही से नहीं देते थे, वे ना तो उत्तर 'हाँ' में देते थे और न ही 'ना' कहते थे। 'ना' कहकर वे महंत जी को नाराज नहीं करना चाहते थे। क्योंकि हरिहर काका के अनुसार भाई के परिवार से जो सुख-सुविधाएँ उन्हें मिल रही थी, वे महंत जी की कारण ही संभव हुई थी। और 'हाँ' वे किसी को भी नहीं कहना चाहते क्योंकि उन्होंने इरादा बना दिया था कि वे अपने जीते जी अपनी जमीन को किसी के नाम भी नहीं लिखेंगे। इस विषय पर वे पूरी तरह से सावधान हो गए थे।

14.पर बितते समय के अनुसार---------- जिसकी आशा न रही हो

जबरदस्ती - बलपूर्वक
अतिरिक्त - सिवाय
विकल्प - उपाय
राजी - सहमत
दबंग - प्रभावशाली
परिणत - जिसमें परिवर्तन हुआ हो

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

गोपनीयता - जो सभी को न बता कर कुछ लोगो को ही बताया जाए
निर्वाह - निभाना / आज्ञानुसार कार्य करना
भनक - उड़ती खबर
गुहार - रक्षा के लिए गुहार
चंपत - गायब हो जाना
शुभचिंतक - भलाई चाहने वाला
आहट - किसी के आने-जाने, बात करने की मंद आवाज

लेखक कहते हैं कि जैसे-जैसे समय बीत रहा था महंत जी की परेशानियाँ बढ़ती जा रही थी। उन्हें लग रहा था कि उन्होंने हरिहर काका को फसाँने के लिए जो जाल फेंका था, हरिहर काका उससे बाहर निकल गए हैं, यह बात महंत जी को सहन नहीं हो रही थी। महंत जी को यह लग रहा था कि हरिहर काका धर्म-संकट में पड़ गए हैं, वे एक ओर तो अपनी जमीन भगवान के नाम लिखना चाहते हैं और वहीँ दूसरी ओर वे अपने भाइयों के परिवार से मिलने वाले आदर-सत्कार के कारण उनसे बाँध गए हैं।
महंत जी बहुत जी लड़ने वाले और प्रभावशाली किस्म के व्यक्ति थे। अपनी योजना को, जो बिलकुल ही बदल गई थी, पूरा करने के लिए महंत जी अपनी पूरी ताकत से लग गए। महंत जी इस कार्य को कुछ ही लोगों को बताकर कर रहे थे। इस बात की जानकारी हरिहर काका के भाइयों को भी नहीं थी।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि अभी कुछ समय पहले की ही बात है। आधी रात के आस-पास देव-स्थान के साधु-संत और उनके कुछ साथी भाला, गंड़ासा और बंदूकों के साथ अचानक ही हरिहर काका के आँगन में आ गए। हरिहर काका के भाई इस अचानक हुए हमले के लिए तैयार नहीं थे। इससे पहले हरिहर काका के भाई कुछ सोचें और किसी को अपनी सहायता के लिए आवाज लगा कर बुलाएँ, तब तक बहुत देर हो गई थी, हमला करने वाले हरिहर काका को अपनी पीठ पर डाल कर कही गायब हो गए थे। लेखक कहता है कि उसके गाँव में किसी ने भी ऐसी किसी भी घटना को न तो पहले कभी देखा था और न ही ऐसी किसी घटना के बारे में सुना था। सारा गाँव शोर के कारण जाग गया। हरिहर काका की भलाई चाहने वाले उनके घर में इकट्ठे होने लगे और बाकी लोग अपने आँगनों और मकानों की छतों पर जमा हो कर किसी के भी आने-जाने और बात-चीत करने की आवाजों को सुन कर आपस में बातें करने लगे

15.हरिहर काका के भाई लोगों के---------- यही एकमात्र रास्ता था....।

मय - युक्त / भरा हुआ
दल-बल - संगी-साथी
सन्नाटा - चुपी / मौन
व्याप्त - पूरी तरह फैला और समाया हुआ
हरजाने - हानि के बदले दिया जाने वाला धन
प्रस्थान - जाना
सम्मिलित - सामूहिक

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

तितर-बितर - अस्त-व्यस्त
बूते - अपने बल पर
जबरन - जबरदस्ती
आदरणीय - आदर के योग्य
श्रद्धेय - श्रद्धा के योग्य
घृणित - घिनौना
दुराचारी - दुष्ट / बुरा आचरण करने वाला
नेक - भला
बेचैन - व्याकुल
उबारना - पार करना / निकलना
एकमात्र - केवल एक

लेखक कहते हैं कि हरिहर काका के अपहरण के बाद हरिहर काका के भाई लोगों के साथ हरिहर काका की तलाश में निकल गए। उन्हें लगा की ये सब महंत का किया काम है। इसलिए वे अपने सगे-साथियों से भरे एक समूह के साथ देव-स्थान जा पहुँचे। वहाँ पर पहुँच कर उन्हें सिर्फ चुप्पी और शांति ही नजर आई। हमेशा की तरह देव-स्थान का प्रमुख दरवाजा बंद ही था। वातावरण में रात की खामोशी और सूनापन फैला हुआ था। फिर सभी को लगा कि यह काम महंत का नहीं है, यह काम बाहर के किसी डाकू के समूह का है और वे हरिहर काका के बदले में उनके परिवार से बहुत ज्यादा धन की माँग करेंगे और जब उनके घर वाले पूरा धन दे-देंगे तभी वे हरिहर काका को छोड़ेंगे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

जब खोज में निकले लोगों को लगा की हरिहर काका देव-स्थान में नहीं है तो वे दूसरी दिशा में उन्हें खोजने के लिए जाने लगे, तभी उसी समय उन्हें देव-स्थान के अंदर से सामूहिक परन्तु बहुत धीमी आवाजें सुनाई पड़ी। सभी के कान खड़े हो गए अर्थात सभी ध्यान से सुनने लगे। अब सभी को पूरा भरोसा हो गया था कि हरिहर काका देव-स्थान में ही हैं। फिर तो बिना सोचे-समझे, बिना देर किए लोग देव-स्थान के प्रमुख दरवाजे को पीटने लगे। तभी देव-स्थान की छत से रोड़े-पत्थर बरसने शुरू हो गए, जिसके कारण वे अस्त-व्यस्त हो कर बिखरने लगे। सभी अपने-अपने हथियारों को सँभालने लगे। परन्तु जब तक वे अपने हथियार सँभालते उससे पहले ही देव-स्थान की खिड़कियों से फायरिंग शुरू हो गई। एक नौजवान के पैर पर गोली लग गई और वह गिर गया। उसके गिरते ही हरिहर काका के भाइयों के साथ आए साथी भाग गए। अब सिर्फ हरिहर काका के तीनों भाई ही वहां रह गए थे। हरिहर काका के भाइयों को उनके अकेले के दम पर सभी का मुकाबला करना कठिन लगा तो वे भी शहर के पुलिस थाने की ओर सहायता के लिए भागे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

16.उधर ठाकुरबारी के भीतर महंत----------मोर्चा सँभाल सुबह की प्रतीक्षा करने लगे।

जबरन - जबरदस्ती
आदरणीय - आदर के योग्य
श्रद्धेय - श्रद्धा के योग्य
घृणित - घिनौना
दुराचारी - दुष्ट / बुरा आचरण करने वाला
नेक - भला
बेचैन - व्याकुल
उबारना - पार करना / निकलना
एकमात्र - केवल एक
दरोगा - इंस्पेक्टर
इंचार्ज - प्रभारी
दस्तक - दरवाजा खटखटाना
सीमित - सीमा के अंदर
असमर्थ - योग्यता न होना

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि एक ओर तो हरिहर काका को बचाने आए सभी लोग भाग गए थे और दूसरी ओर देव-स्थान के अंदर महंत और उनके कुछ साथी कुछ लिखे हुए कागजों पर ज़बरदस्ती अनपढ़ हरिहर काका के अँगूठे के निशान लेना चाह रहे थे। हरिहर काका तो महंत के इस तरह के व्यवहार से जैसे आसमान से जमीन पर गिर गए थे क्योंकि उन्होंने सपने में भी नहीं सोचा था कि महंत जी का ऐसा भी कोई रूप सामने आएगा। जिस महंत को वे आदर और सम्मान तथा श्रद्धा के समान समझते थे, वे असल में इतने घिनौने, दुष्ट और पापी प्रकृति के निकलेंगे। अब हरिहर काका के मन में महंत के लिए नफरत पैदा हो गई थी, वे महंत की सूरत भी नहीं देखना चाहते थे। हरिहर काका को अब अपने भाइयों का परिवार महंत की तुलना में बहुत ही पवित्र, नेक और अच्छा लगने लगा था। हरिहर काका अपने घर जाने के लिए बहुत ज्यादा व्याकुल हो रहे थे। लेकिन महंत के साथियों ने उन्हें पकड़ रखा था। महंत जी हरिहर काका को समझा रहे थे कि यह सब जो उन्होंने किया है वह हरिहर काका के भले के लिए ही किया है। इस समय हरिहर काका को लग सकता है कि महंत उनके साथ जोर-जबरदस्ती कर रहा है, परन्तु महंत कहता है कि जिस धर्म-संकट में हरिहर काका फँस गए थे उससे बाहर निकालने के लिए यही एक रास्ता था।

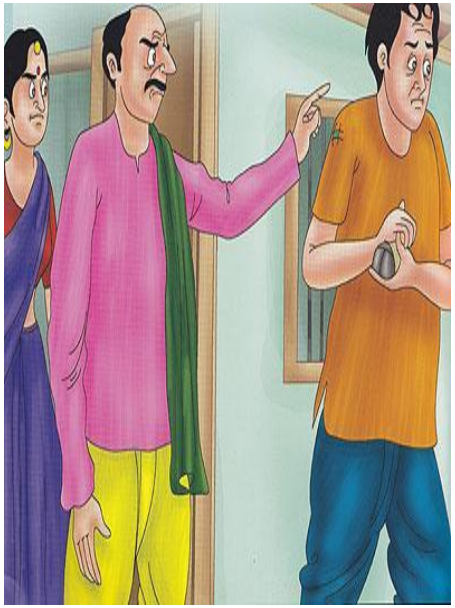

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि एक ओर तो देव-स्थान के अंदर जबरदस्ती हरिहर काका के अँगूठे का निशान लेने और पकड़कर समझने का काम चल रहा था, तो वहीं दूसरी ओर हरिहर काका के तीनों भाई सुबह होने से भी पहले ही पुलिस की जीप को लेकर देव-स्थान पर पहुँच गए थे। जीप से तीनों भाई, एक सब-इंस्पेक्टर और आठ जवान उतरे। पुलिस की ओर से पुलिस प्रभारी ने देव-स्थान का प्रमुख दरवाजा खटखटाया और आवाज भी दी। लेकिन देव-स्थान के अंदर से कोई आवाज बाहर नहीं आई। जब किसी ने देव-स्थान का दरवाजा नहीं खोला और न ही कोई उत्तर दिया तो पुलिस ने देव-स्थान को चारों ओर से घेरना शुरू कर दिया। देव-स्थान अगर छोटा होता तो पुलिस आसानी से उसे घेर लेती, लेकिन देव-स्थान इतना विशाल था कि पुलिस के उन थोड़े से सिपाहियों के लिए ये आसान नहीं था। फिर भी जितना हो सकता था उन्होंने देव-स्थान को चारों ओर से घेर लिया और अपने-अपने स्थान पर पहरा देते हुए सुबह का इंतज़ार करने लगे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

17.हरिहर काका के भाइयों ने सोचा था कि----------पुलिस के जवान सावधान हो गए।

रँगे हाथों पकड़ना - जुर्म करते हुए पकड़े जाना
रोड़ा - छोटा पत्थर
आत्मसमर्पण - हथियार डाल देना
वय - उम्र
महटिया – नजर अंदाज कर देना
एकत्र - इकठ्ठे
कुंजी - चाबी

जब हरिहर काका के भाई पुलिस को ले कर देव-स्थान आए तो उन्हें लगा था कि पुलिस पर भी देव-स्थान के अंदर से उसी तरह से रोडों और पत्थर से हमला होगा जिस तरह उन पर हुआ था और साधु-संत जुर्म करते हुए पकड़े जाये। लेकिन जैसा उन्होंने सोचा था वैसा कुछ भी नहीं हुआ। देव-स्थान के अंदर से एक छोटा-सा पत्थर भी नहीं आया। ऐसा लग रहा था जैसे उन्होंने पुलिस को आते हुए देख लिया था। सुबह होने में अभी काफी समय बाकी था इसलिए पुलिस प्रभारी बार-बार कुछ समय के विराम के बाद दरवाजे को खटखटाता और साधु-संतों को हथियार डालने को बोलता रहा। इसके साथ ही पुलिस बीच-बीच में हवा में भी फायर कर रही थी, लेकिन देव-स्थान से इसके जवाब में कोई भी कार्यवाही नहीं हुई।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

लेखक कहते हैं कि जब सुबह हुई तो एक बहुत ही वृद्ध साधु ने देव-स्थान का प्रमुख दरवाजा खोल दिया। देखने से लग रहा था कि उस साधु की उम्र अस्सी वर्ष से भी अधिक की होगी। वह लाठी ले कर खड़ा था और काँप रहा था। पुलिस प्रभारी उस वृद्ध साधु के पास गया और उससे हरिहर काका और देव-स्थान के महंत, पुजारी और दूसरे साधुओं के बारे में पूछा। लेकिन उस वृद्ध ने कुछ भी बताने से इंकार कर दिया। पुलिस प्रभारी ने उससे बहुत बार एक ही बात पूछी, उसे बहुत बार डाँटा भी और साथ-ही-साथ धमकियाँ भी दी, परन्तु वह वृद्ध साधु हर बार एक ही उत्तर दे रहा था कि उसे कुछ भी नहीं पता। ऐसे वक्त में अगर पुलिस के सामने उस वृद्ध साधु की जगह कोई और होता तो पुलिस उससे मार-पीट कर सब बातें उगलवा देती, परन्तु उस साधु की उम्र के कारण पुलिस प्रभारी को सब कुछ नजर अंदाज करना पड़ा । लेखक कहते हैं कि पुलिस प्रभारी के नेतृत्व में सभी पुलिस के जवान देव-स्थान की अच्छे से तलाशी लेने लगे। लेकिन न तो पुलिस को देव-स्थान के नीचे वाले कमरों में कुछ मिला और न ही देव-स्थान के छत के कमरों में कोई मिला। पुलिस के जवानों ने देव-स्थान की बहुत अच्छे से छान-बीन की, परन्तु उन्हें उस वृद्ध साधु अलावा उस देव-स्थान पर और कोई भी नहीं मिला । लेखक कहता है कि देव-स्थान के जितने भी कमरे खुले हुए थे, पहले उन कमरों की तलाशी ली गई। उसके बाद जो कमरे कुंडी लगाकर बंद किए गए थे, उन्हें खोल कर देखा गया था। कहीं कुछ नहीं मिला। फिर एक कमरा जिसके बाहर बड़ा-सा ताला लटक रहा था, उस के सामने पुलिस और हरिहर काका के भाई सब इकट्ठे हो गए। उस कमरे की ताली जब उस वृद्ध साधु से माँगी गई तो उसने साफ़-साफ़ कह दिया कि उसके पास नहीं है। जब पुलिस ने वृद्ध साधु से पूछा कि उस कमरे न क्या रखा है, तो उसने जवाब दिया कि उस कमरे में अनाज रखा गया है। पुलिस के प्रभारी अभी सोच ही रहे थे कि उस कमरे का ताला तोड़ना है या उस कमरे की तलाशी नहीं लेनी है, तभी उस कमरे को किसी ने अंदर की ओर से धक्का देना शुरू कर दिया। यह देख कर पुलिस के जवान सावधान हो गए।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

18.ताला तोड़कर कमरे का दरवाजा खोला----------आधे लोग जागकर पहरा देते रहते।

खून खौल उठना - बहुत क्रोध आना
परदाफाश -भेद प्रकट कर देना
बयान - हाल / वृतांत
घृणा - घिन
बहुमूल्य - बहुत ज्यादा कीमती
सँजोना - सँभाल कर रखना
सुरमा - योद्धा / बहादुर
ड्यूटी - कर्तव्य / काम

लेखक कहते हैं कि जब कमरे को किसी ने अंदर की ओर से धक्का देना शुरू कर दिया तो पुलिस ने कमरे का ताला तोड़ दिया और कमरे को खोल दिया। उस कमरे के अंदर हरिहर काका उन्हें जिस स्थिति में मिले उसे देखकर उनके भाइयों को इतना अधिक गुस्सा आ गया था कि अगर उस समय देव-स्थान के महंत, पुजारी या अन्य नौजवान साधु उन्हें नजर आ जाते तो वे उन्हें मार ही डालते। कमरे में हरिहर काका को हाथ और पाँव बाँध कर रखा गया था और साथ ही साथ उनके मुँह में कपड़ा ठूँसा गया था ताकि वे आवाज़ न कर सकें। परन्तु हरिहर काका दरवाज़े तक लुढ़कते हुए आ गए थे और दरवाज़े पर अपने पैरों से धक्का लगा रहे थे ताकि बाहर खड़े उनके भाई और पुलिस उन्हें बचा सकें।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

दरवाज़ा खोल कर हरिहर काका को बंधन से मुक्त किया गया। उनके मुँह से कपड़ा निकाला गया। हरिहर काका ने देव-स्थान के महंत, पुजारी और साधुओं के सभी गुनाहों का भेद खोलना शुरू किया कि वह लोग साधु नहीं, डाकू, हत्यारे और कसाई हैं, वे लोग काका को उस कमरे में इस तरह बाँध कर कही छिपे हुए दरवाज़े से भाग गए हैं और उन्होंने कुछ खाली और कुछ लिखे हुए कागजों पर हरिहर काका के अँगूठे के निशान जबरदस्ती लिए हैं और भी हरिहर काका उनके भेद खोलते ही जा रहे थे। लेखक कहते हैं कि हरिहर काका काफी समय तक पुलिस को अपना हाल या वृतांत बताते रहे। उनके प्रयोग में लाए गए एक-एक शब्द में साधुओं के प्रति नफ़रत और घिन का एहसास हो रहा था। हरिहर काका ने अपनी पूरी जिंदगी में कभी भी किसी के ख़िलाफ़ इतना सब कुछ नहीं बोला था जितना उन्होंने देव-स्थान के महंत, पुजारी और साधुओं के बारे में कह दिया था।यह सब बीत जाने के बाद हरिहर काका फिर से अपने भाइयों के परिवार के साथ रहने लग गए थे। परन्तु इस बार हरिहर काका को बरामदे में नहीं बल्कि घर के अंदर रखा गया था, वह भी किसी बहुत ही कीमती चीज़ की तरह सँभाल कर और सभी से छुपाकर। हरिहर काका की सुरक्षा के लिए रिश्ते-नाते में जितने भी योद्धा और बहादुर लोग थे सभी को बुलाया गया था। हथियारों का भी पूरा प्रबंध किया गया था। चौबीसों घंटे पहरे दिए जाने लगे थे। यहाँ तक कि अगर हरिहर काका को किसी काम के कारण गाँव में जाना पड़ता तो हथियारों के साथ चार-पाँच लोग हमेशा ही उनके साथ रहने लगे। रात को भी हरिहर काका को चारों और से सुरक्षा दी जाती। हरिहर काका के भाइयों ने अपने काम बाँट लिए थे। जब आधे लोग सो रहे होते थे तब बाकि के आधे लोग हरिहर काका की सुरक्षा में तैनात रहते थे।

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow

THANKING YOU

ODM EDUCATIONAL GROUP

ODM EDUCATIONAL GROUP
Changing your Tomorrow